Vijay Kumar Jha
Deptt in History
V.S.J. College Rajnagar
Degree part II
Paper III

The Chola Dynasty

दक्षिण भारत के राजवंशों में चोल वंश का महत्वपूर्ण स्थान है चोल वंश का उल्लेख महाभारत, मेगास्थनीज का विवरण, अशोक के अभिलेख तथा बौद्ध ग्रंथों में मिलता है। अशोक के अभिलेख से ज्ञात होता है कि प्राचीन भारत में चोलों के एक नहीं बल्कि दो राज्य थे। इनकी पुष्टि यूनानी यात्री टालमी भी करते हैं। चोल राज्यों की राजधानियां क्रमशः उरईयुर एवं अर्काटोस थी। उरईयुर आधुनिक त्रिचुनापल्ली एवं अर्काटोस अर्काट कहलाता है।

इतिहासकारों का मत है कि संगम साहित्य कि रचना ईसा के प्रारम्भिक सदी में कि गई थी अतः संगम साहित्य से चोल शासकों के बारे में सारे प्रमाण उपलब्ध है। चोल शासको कि समस्त सूची इस साहित्य में उपलब्ध है। संगम कालीन चोल शासकों में सबसे प्रतापी शासक करिकाल था इसके पिता का नाम इलंजेटचेन्नी था जिसे शत्रुओं के हाथीयों के काल कहा गया है। करिकाल की बढ़ते शक्ति को देखकर पाड्य, चेरों आदि जातियों ने उनके विरुद्ध संघ बनाया करिकाल ने वेण्णि, बाकै परंदलै के संघ को सामीलित पराजीत किया करिकाल ने इरंगोवेल एवं अरूवालर को भी पराजीत किया। करिकाल ब्राह्मण धर्म का समर्थक था। उसने कई लोकहितकारी कार्य किये तथा उद्योग एवं व्यापार को आगे बढ़ाया। इसने नवीन राजधानी कावेरी पट्टिनम बसाया।

करिकाल के बाद उसका पुत्र नेडुमुडिकिल्ली राजा बना जो दुर्बल शासक साबित हुआ फलतः पूर्व में हारे हुए राज्य चेर और पाड्य ने चोल साम्राज्य पर आक्रमण कर दिया।

Scanned with Cam

(2)

चोल साम्राज्य एक

चोल साम्राज्य एकबार फिर नष्ट हो गया और चोल वंश कुछ समय के लिये शक्तिहीन हो गया।

नवीं सदी मे पुन: चोलो का उदय हुआ तथा उसे फिर से शक्तिशाली होना दक्षिण भारत के एक प्रमुख घटना मानी जाती है। इस समय चोल वंश के विजयालय चोलो के स्वतंत्र राज्य की स्थापना किया और तंजौर मे एक दुर्गा मन्दिर का निर्माण करवाया।

विजयालय के बाद उसका पुत्र आदित्य प्रथम शासक बना। आदित्य प्रथम ने पांड्य शासको को पराजित किया किन्तु वह अत्यन्त महत्वाकांक्षी शासक था और एक स्वतंत्र चोल साम्राज्य करना चाहता था और वह पल्लव साम्राज्य पर अधिकार कर अपनी सीमा राष्ट्रकूटों के प्रदेश तक कायम किया। आदित्य प्रथम ने गंग शासक, पांड्य नरेश तथा कांगु प्रदेश पर आधिपत्य कायम कर लिया। वह शैव धर्मावलम्बी था।

आदित्य प्रथम के बाद उसका पुत्र परान्तक प्रथम गद्दी पर बैठा। परान्तक ने राष्ट्रकूट शासक कृष्ण द्वितीय को पराजीत किया। परान्तक ने मदुरैकोण्ड कि उपाधि धारण की। परान्तक ने पांड्य राज्य पर भी अधिकार कर लिया। तत्पश्चात परान्तक क्रमश: लंका, बैदुम्बों, राष्ट्रकूटों पर विजय भी हासिल किया। किन्तु परान्तक के मृत्योपरान्त तथा राजराज प्रथम के सिंहासारोहन के बीच चोल साम्राज्य का पतन का काल था।

राजराज प्रथम ने एक बार फिर चोल साम्राज्य की खोई हुई प्रतिष्ठा एवं सम्मान को पुन: हासिल किया। राजराज परान्तक का द्वितीय पुत्र था। उसके शासन काल मे चोल साम्राज्य वास्तविक रुप से महान बना। एक छोटे से राज्य को वह अपने तीस वर्षीय शासन काल मे सुदृढ एवं सशक्त साम्राज्य बना डाला। राजराज प्रथम ने केरल, पांड्य, चेर, लंका, बेंगी, पश्चिमी चालुक्य पर विजय प्राप्त किया। राजराज ने कलिंग पर भी विजय प्राप्त किया और उसने अपने साम्राज्य कि सीमा तुंगभद्रा नदी, मालद्विप तक बढ़ाया तथा विस्तृत चोल साम्राज्य कायम किया। वह कुशल प्रशासक के साथ ही कुशल साम्राज्य निर्माता भी था, वह धर्म सहिष्णु था कई मन्दिरों का निर्माण करवाया वह शैव धर्मावलम्बी था किन्तु अन्य धर्मों के प्रति सहानभूति रखता था।

FEBRUARY 2019

Mo	Tu	We	Th	Fr	Sa	Su
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28			

Scanned with Can

राजराज प्रथम के मृत्योपरान्त उसका पुत्र राजेन्द्र प्रथम 1014 ई० में शासक बना। अपने पिता की तरह वह भी एक महत्वाकांक्षी सम्राट था। उसे दो वर्षों का युवराज के रूप में शासन का अनुभव था वह साम्राज्यवादी विचार धारा का था। उसने अपने साम्राज्य की सीमा दूर-दूर तक बढ़ाने का प्रयास किया। उसने श्री लंका, चेर, पाण्ड्य, चालुक्य पूर्वी भारत पर विजय अभियान चलाया। उसने कडारम को भी नतमस्तक करने पर विवश किया उसने अपनी शक्ति प्रदर्शन के लिये मलाया, सुमात्रा, जावा पर भी आक्रमण किया।

राजेन्द्र प्रथम के मृत्यु के बाद उसका पुत्र राजाधिराज प्रथम 1018 ई० में शासक बना इसने केरल तथा पांड्य शासकों को पराजित किया तथा लंका के विद्रोह को दबाया। राजाधिराज ने चालुक्य शासक के पुत्र विक्रमादित्य को पराजित किया। राजेन्द्र प्रथम के बाद ~~उसका पुत्र~~ द्वितीय भ्राता राजेन्द्र द्वितीय गद्दी पर बैठा। उसने चालुक्य शासक को पराजित किया साथ ही चोल साम्राज्य पर आक्रमण करने की योजना बनाने वाले शत्रु को करारा जवाब दिया। उसने कोल्हापुर पर अधिकार किया तथा श्री लंका को पराजित किया। उसने कोल्हापुर में जय स्तम्भ का निर्माण किया। राजेन्द्र द्वितीय के मृत्योपरान्त कुलोत्तुंग प्रथम राजा बना उसने वेंगी और चोल साम्राज्य का एकीकरण किया उसके। कुलोत्तुंग के काल से चोल इतिहास में एक नया कि प्रारम्भ होती है। चालुक्य राजा के साथ कुलोत्तुंग का युद्ध हुआ जिसमें कुलोत्तुंग विजयी हुआ और गंगवाड़ी पर उसका अधिकार हो गया। कुलोत्तुंग ने कलिंग पर भी विजय प्राप्त की जिसका वर्णन कलिंगत्तुपराणि नामक ग्रंथ में मिलता है। चोल अभिलेख से ज्ञात होता है कि कुलोत्तुंग को गहड़वालों से मधुर सम्बन्ध थे। कुलोत्तुंग को चीन के साथ भी मधुर सम्बन्ध थे। कुलोत्तुंग का अंतिम समय विपत्तियों से भरा था फिर भी कुलोत्तुंग ने स्वयं को एक योग्य शासक प्रमाणित किया तथा शासन व्यवस्था को सुसंगठित किया

Scanned with Cam